Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025,
ISSN 2229-3388

ओम प्रकाश वाल्मीकि के दलित साहित्य में सामाजिक चेतना का एक मूल्यांकन

अपनेश कुमार (शोध छात्र)

डा0 धनेश कुमार मीना (शोध निर्देशक)

विशय हिन्दी कला विभाग, फैक्लटी ऑफ मानविकी मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ़

सारांश

भारतीय सहित्य के इतिहास में कविता आदिकाल से ही अनुभवों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन रही है। कविता की शक्ति और सामर्थ्य इस बात में रहता है कि प्राचीन काल से चली आ रही परम्परागत साहित्य की शक्ति कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति पा रही है। दलित रचनाकारों ने भी प्रारम्भ मैं कविता को ही रचना का अपना माध्यम बनाया। भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, विषमताएँ और विसंगतियाँ दलित कविता को जन्म देती हैं। इनमें व्यक्त विद्रोह, आक्रोश और संघर्ष चेतना परिवर्तन की प्रतिबद्धता ही दर्शाती है। नव–जीवनमूल्यों को स्थापित करने के प्रयास में रची गई दलित कविता दलितों की आन्तरिक ऊर्जा को ही अभिव्यक्ति देती है। दलित सदियों से संताप भोगते रहे हैं, यह कविता इन संतापों को मुखरित कर नवीन संभावनाओं की तलाश करती हैं। यह शोधार्थी को स्पष्ट करती है कि हजारों वर्षों से संघर्षों को झेल रहे दलित जीवन को मधुर स्वर देकर परिवर्तन की माँग पूर्णतया जायज है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएँ हिन्दी की दलित कविता के विकास में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करती है। उन्होंने दलित जीवन की पीड़ाओं, समस्याओं, अत्याचारों व यातनाओं को अभिव्यक्त करते हुए दलित समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। शोषित, पीड़ित दलितों के दुःख को अभिव्यक्ति देने वाली कविताएँ वर्ण–व्यवस्था को चुनौती देती प्रतीत होती है। वे भाग्य, ईश्वर, नियति के विरुद्ध अपनी बात कहते हुए बताते है कि इनके पीछे व्याप्त स्वार्थ व षड्यंत्र को उजागर करना ही चाहिए।

मुख्य शब्द, ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'सदियों का संताप','बस्स बहुत हो चुका', 'अब और नहीं' तथा 'शब्द झूठ नहीं बोलते आदि।

प्रस्तावना, ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कविता की रचना प्रक्रिया को स्पष्ट करने का हर सम्भव प्रयास किया है। इसी संदर्भ में वे कहते हैं, ''मेरी रचना प्रक्रिया में जातीय दंश बहुत गहरे हैं। मुझे यह कहने में या स्वीकार कर लेने में भी कोई गुरेज दिखाई नहीं देता कि मेरे लेखन में, चाहे कविता हो, कहानी या आत्मकथा हो सभी जगह यह स्वर प्रमु ही लगते है।'' ओमप्रकाश वाल्मीकि के कुल चार कविता संग्रह आज तक प्रकाशित हो चुके हैं, 'सदियों का संताप', 'बस्स बहुत हो चुका', 'अब और नहीं' तथा 'शब्द झूठ नहीं बोलते'। इन संग्रहों की कविताओं में

परम्परागत जाति व्यवस्था और उपजी जीवन की यातनाओं का सत्य निहित है। इन कविताओं में दलित समाज का आक्रोश, विद्रोह, नकार, आग्रह, आक्रामकता, भाषिक विकास और उत्पीड़न को संदर्भित करने का प्रयास नजर आता है। जातीय चेतना को अभिव्यक्ति देने का प्रयास मानवतावादी दृष्टि से नवीन मूल्यों की स्थापना का प्रयास है। इन कविताओं में समाज व्यवस्था की खामियों और दलित जीवन की त्रासदी है, जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं में भी देखा जा सकता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएँ स्वानुभूत यथार्थ का नग्न स्वरूप है। उन्होंने जिस जीवन को स्वयं जीया, अनुभूत किया, उस पूँजीवादी सामंती व्यवस्था के शोषणवादी कार्यों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। दलितों के शोषण का एक प्रमुख हथियार श्श्रमश सदियों से चला आ रह है। समाज का जो वर्ग सबसे मेहनतकश है, जो जी–तोड़ मजदूरी करता है, उसे पेट भरने को भोजन, तन ढकने को वस्त्र न मिल पाए और वह वंचितों के समान जीवनयापन को मजबूर रहे। इससे अधिक विवशता और क्या होगी ? उनकी 'युग चेतना' उनकी कविता में शोषण का यह नग्न यथार्थ निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्ति पा रहा है–

मैं खटता खेतों में
फिर भी भूखा हूँ
निर्माता मैं महलों का
फिर भी निष्कासित हूँ
प्रताड़ित हूँ।

दलितों का आक्रोश समय–समय पर अभिव्यक्त तो होता है, परन्तु उनकी पुकारें खामोश रहती हैं। यह आक्रोश वैचारिक धरातल का सत्य है। कभी तो यह खामोश चीख पूर्ण बल के साथ विकास को प्राप्त करेगी। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपने भीतर इसी प्रकार की पुकार को अपनी कविता आदिम रूपश की निम्नलिखित पंक्तियों में इस प्रकार अनुभूत करते हैं–

और मैं। चुपचाप सुनता रहा
निरन्तर बजता रहा
मेरे भीतर अनहद नाद
सन्नाटों की खामोशी चीख सी।

अत्याचार, प्रताड़ना तथा शोषण शारीरिक और मानसिक स्तर की ऐसी यातनामयी प्रथा है, जिसमें भोक्ता ही यातना के दर्द को समझ सकता हैं। वर्ण–व्यवस्था ने शोषक वर्ग के प्रभुत्व को स्थापित कर शोषित को यातना के जंगलों में भटकाया है। शोषक वर्ग ने सर्वहारा वर्ग का सदैव शोषण ही किया है। सामंती समाज के शोषण का एक हथियार देह शोषण भी है। ऐसी कई अमानवीय घटनाएँ बार–बार समाज के सामने उपस्थित होती रही हैं, जिनमें दलित स्त्रियों के साथ आम धारणाली अमानवीय व्यवहार आम धारणा थी।

उस बेटे का चेहरा

जिसके सामने फेंक दिए हो

नोच–नोच के

उसकी माँ के वस्त्र।

परामपरावादी भारतीय संस्कृति में नारी को दुर्गा, देवी, शक्ति कहकर विभूषित किया गया है। जहाँ स्त्री देह को पवित्र माना जाए, वहाँ पुत्र के सामने माँ की देह के साथ कोई घृणित कार्य करे, इससे अधिक अधर्म क्या हो सकता है।

जिसकी बढ़ती बेटी के जिस्म पर

टिक जाती है गिद्ध नजरे

याद करों उस बाप का चेहरा।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएँ दलित जीवन के गहरे अँधेरे को व्यक्त कर प्रकाश की आशा में रची गई रचनाएँ हैं। दलित रोटी, कपड़ा, मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित है। ओमप्रकाश दलित जीवन के अनुभूत अँधेरे को अपनी कविता 'रोशनी के उस पार' में इस प्रकार शब्दबद्ध करते है –

बन जाती है

सपनों की कब्रगाह

भूख की अँधेरी गुफाएँ

नंग–धडंग घूमते बच्चों की आँखों में

अँधेरे–उजालों के बीच

गुप्त सन्धि के बाद

गली के खम्भों पर रौशनी नहीं उगती

पानी नहीं आता नल में

सू–सूँ की आवाज के बाद भी।

इसी प्रकार की कविता है – ठाकुर का कुआँ। इसमें लेखक बताता है कि संसाधनों को बनाने वाली जातियाँ संसाधनों से वंचित है। वे अभावग्रस्त जीवन–यापन को विवश है। दूसरा वर्ग

शोध पूर्व साहित्यिक अवलोकन, इस शोध पत्र के मैनें जिन शोध पूर्ण किताबों का अध्ययन किया है, वे इस प्रकार है।

गिरि, दीपक (20200) भारतीय दलित साहित्य 'दलित' शब्द गरीब, शोषित, उत्पीड़ित और जरूरतमंद लोगों का पर्याय है। भारतीय जाति व्यवस्था की उत्पत्ति के बारे में कोई सार्वभौमिक रूप से प्रशंसित अवधारणा नहीं है। प्रत्येक सभ्य समाज में कुछ प्रकार की असमानताएँ होती हैं जो सामाजिक भेदभाव को जन्म देती हैं।

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

डॉ अंजू बाला वॉयसलेस (2020) को आवाज देना दलित साहित्य का एक अध्याय पर्सपेक्टिव्स ऑन इंडियन दलित लिटरेचरः क्रिटिकल रिस्पॉन्स'' छब्बीस विद्वानों के लेखों का एक खंड है जो दलितों की स्वतंत्रता और पारंपरिक जाति–कलंकित समाज से मुक्ति के विषय पर केंद्रित है जो परंपरा की वेदी पर दलितों के हितों का बलिदान करता है।

अनीता (2022) हम संघर्ष करते है दलित नारीवादी लेखन एक हिंदी लघु कहानी का विश्लेषण अस्पष्ट क्षेत्रों को भरने और समाधान करने की पेशकश करता हैवर्तमान साहित्यिक चर्चा और बहस में भारी अंतर (वह)। हमारी साहित्यिक और कलात्मक संस्कृति के संपूर्ण खंडों को छिपाएं), के माध्यम सेएक वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य, दलित साहित्य का विश्लेषण औरसंस्कृति अपने असंख्य पहलुओं में और वह भी बड़े पैमाने पर और अंदरएक अंतरराष्ट्रीय संदर्भ. यह साहित्यिक ई–जर्नल सेवा करना चाहता है।

शोध के उद्देश्य इस शोध पत्र को पूरा करने के लिये मैरे द्वारा निम्नलिखित शोध उद्देश्यों का निर्माण किया गया है। वे इस प्रकार है।

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में कहानी लेखन का अध्ययन करना ।

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में महाजनी संस्कृति का अध्ययन करना ।

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में मानवीय संवेदना का अध्ययन करना ।

शोध प्रश्न इस शोध पत्र को पूरा करने के निम्नलिखित शोध प्रश्न का निमार्ण किया गया है। जो इस प्रकार है।

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में मानवतावाद को ज्ञात करना ।

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में मुक्ति पथ को ज्ञात करना

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में जीवन सधर्ष को ज्ञात करना ।

शोध विधि : इस शोध पत्र को पूरा करने के लिये मैं निम्न शोध विधियों का प्रयोग इस शोध पत्र में किया है, क्योकि भारतीय साहित्य में बन्द प्रकार के ऑंकड़े ही होते है जैसे अतीत की घटना को आज शोधार्थी ने न तो देखा है और ना वह उस समय घटना उसके सामने हुई है, घटना का जो उल्लेख तात्कालीन हिन्दी के साहित्यकारो ने किया है । उसी से आज सत्य को सावधानीपूर्ण खोजना भी है। इसीलिये मेरे इस शोध पत्र में मेरे द्वारा वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध समस्याऐं, उच्चतम उद्देश्य का दलितों लिखना है नहीं सुंदरता का शिल्प,लेकिन अनुभव की प्रामाणिकता. दलित लेखकों ने हमें उत्पीड़न की प्रकृति बताई। हालाँकि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उनकी कहानी भारत के आधे हिस्से की आवाज हैजो अनगिनत पीढ़ियों से ध्वनिहीन है।एक दलित व्यक्ति अपने जीवन में जाति के कारण जिस वीभत्स जीवन को देखता है, उस

कारण उसके जीवन में गहरी वेदना और वितृष्णा उभर जाती है। वह धर्म, दर्शन और परम्पराओं में इसका कारण व समाधान खोजने का प्रयास करता है, परन्तु यही सब उसके खिलाफ एकजुट दिखाई देते हैं। इसके फलस्वरूप वह इन सबके खिलाफ होकर जीने को अपना ध्येय बना लेता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वर्ग जाने की शास्त्रोक्त नीति को भी प्रश्नाकुल निगाहों के घेरे में लाकर पूरी परम्परा और धर्म के ढकोसलों पर भारी व्यंग्य कर देते हैं। जिसे उनकी कविता जाति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जो इस प्रकार हो।

स्वीकार्य नहीं मुझे जाना,
मृत्यु के बाद
तुम्हारे स्वर्ग में।
वहाँ भी तुम
पहचानोगे मुझे
मेरी जाति से ही।

विषय का महत्व, ओमप्रकाश वाल्मीकि जानते थे कि दलित चीखों को ज्ञान चक्षु के माध्यम से ही समझने योग्य बनाया जा सकता है। समाज व्यवस्था की खोखली स्थितियों को प्रत्यक्ष करने के लिए उनकी कविता संघर्ष और विद्रोह का हथियार उठाती है। वे अपने जीवनानुभवों में प्राप्त अपमानजनक व अशोभनीय दंशों को कविता की भाषा गढ़ने में हथियार बनाते हैं। जिसे कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता 'सदियों को संताप' में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जिसे निम्न तरह से व्यक्त किया गया है।

इसलिए, हमने अपनी समूची घृणा को
पारदर्शी पत्तों में लपेटकर
ठूंठ वृक्ष की नंगी टहनियों पर
टाँग दिया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जानते है कि दलित मेहनतकश है। वह खेत में फसल उगाता है, उसे काटता भी है, परन्तु स्वयम भूखा रहता है, वह महल बनाता है, परन्तु खुले आसमान के नीचे जीवनयापन करता है। उसे लगता है कि उसके कार्य का लाभ दूसरे लोग ही उठाते है। फिर भी उसको सभी सुविधाओं से वंचना मिलती है। तब वह दलित संसार को पाखण्डमय मानने लगता है। शोषण के दलदल में फँसा दलित वर्ग क्या अनुभूति करता है, उसे ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी कविता श्युग चेतना में निम्नलिखित शब्दों में वाणी देते हैं –

मैं खटता खेतों में
फिर भी भूखा हूँ
निर्माता मैं महलों का फिर भी निष्कासित हूँ

प्रताड़ित हूँ
इठलाते हो बलशाली बनकर
तुम मेरी शक्ति पर
फिर भी मैं दीन–हीन जर्जर हूँ
इसलिए युग समूचा
लगता है पाखंडी मुझको।

निष्कर्ष, इस प्रकार कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि की समस्त रचनाएँ दलित जीवन के संघर्षों का यथार्थ है। इनकी कविताओं में ऐसी कोई कविता नहीं हैं, जिनके मूल में जातिवाद और दलित जीवन की पीड़ा और दुःख न हो। इनमें समाज की विसंगतियों और विषमताओं का नग्न चित्रण प्रस्तुत है। इनमें दलित समाज का आक्रोश, प्रतिरोध, विद्रोह, नकार, आग्रह, आक्रामकता, दलित जीवन संघर्ष, उत्पीड़न के संदर्भ विन्दु और उनसे उत्पन्न वेदनाओं के दंश, दलित संस्कृति की विशिष्ट जीवन दृष्टि को चित्रित किया है। दलित जीवन की त्रासदी और पीड़ा से उत्पन्न आक्रोश के बीज भी इसमें अभिव्यक्ति पाते हैं। दलित कवि अपनी स्वानुभूति का साधारणीकरण व्यवस्था के भयावह स्वरूप का दिग्दर्शन कराता है। अब भारत में दलितों में धीरे–धीरे जाति चेतना विकास पा रही है। वह मानता है कि अब उसे सहानुभूति और दया की जरूरत नहीं है। इसलिए वे विद्रोह और जागृति की प्रेरणा देते हैं। नई पीढ़ी की जागृति में नया इतिहास रचने की शक्ति है। जिसकी अभिव्यक्ति अनिवार्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 ओमप्रकाश वाल्मीकि, तनी हुई मुट्ठियाँ, सदियों का संताप, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, 2008,

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि, झाड़ूवाली, संदियों का संताप, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, 2008,

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि, उन्हें डर है, शब्द झूठ नहीं बोलते, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली,

4 ओमप्रकाश वाल्मीकि, बस्सा बहुत हो चुका, बस्स। बहुत हो चुका, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,

5 ओमप्रकाश वाल्मीकि, उत्सव, शब्द झूठ नहीं बोलते, अनामिका पब्लिशर्स